

**Discussion in VCD No.947, dated 19.6.08 at T.P.G. (Part-2)**

**Part-I**

बाबा – 500–700 करोड़ पत्तों में जो भी बच्चे रूप हैं, उन सब बच्चों में शिरोमणि है, सतोप्रधान है। जानता है या नहीं जानता है? जानता है, इसलिए उस बच्चे को मस्तक पर विराजमान करके रखा हुआ है, सरमाथे पर। जैसे लौकिक बाप होते हैं, जो बड़ा बच्चा होता है उससे बड़ी आस रहती है। ये राज्य को, राज–काज को चलावेगा, तो सरमाथे पर रखते हैं। (किसी ने कहा – लेकिन अधूरा दिखाया ना बाबा) युवराज बनेगा। भले अभी अधूरा, पढ़ाई चल रही है। पढ़ाई पूरी नहीं हुई है, फिर भी बाप की बच्चों में उम्मीद रहती है – ये मुरली में बोला है।

जिज्ञासु:– भविष्य में।

बाबा:– हाँ, जी।

**Baba:** Those who are in the form of children among the 500-700 crore (5-7 billions) leaves (of the kalpa tree), among all those children, he is the highest gem, he is *satopradhan* (dominated by the quality of goodness or purity) pure. Does he know or not? He knows; that is why He has given him a seat on his head, on his forehead. For example the *lokik* fathers that are there; they have a lot of hopes from the eldest child. He will take care of the kingdom, the administration; so, he is given a seat on the forehead. (Someone said But Baba he has been shown to be incomplete, hasn't he?) He will become the crown-prince. Although now he is incomplete; the study is going on, the study has not yet completed, even then it has been said in the Murli, "The Father olds His hopes on the children".

Student: In the future.

Baba: Yes.

जिज्ञासु :- लेकिन गायन या महिमा जो सम्पन्न रूप में होती है, अधूरा की नहीं होती है ना।

बाबा:– अधूरे की महिमा मुसलमान अधूरे गाते हैं। मुसलमान धर्म अधूरा है। वो सम्पूर्ण बाप को नहीं पहचानता। सम्पूर्ण चंद्रमा का बाप के साथ क्या कनेक्शन है, वो भी नहीं जानता, मानता, इसलिए वो सर्वोपरि चंद्रमा को ही समझता है। जो दूसरे धर्म के हैं, वो माँ को ही तरजीह देते हैं, महत्व देते हैं; क्योंकि जानते हैं – बाप तो हमारी कोई बात माननेवाला है नहीं। माँ को जल्दी पटाया जा सकता है।

**Student:** But the praise or greatness is of the complete form and not of the incomplete form, isn't it?

**Baba:** The Muslims, who are incomplete, sing the greatness of the incomplete one. The Muslim religion is incomplete. It does not recognize the complete Father. It does not even know or accept the connection between the complete moon and the Father. That is why it considers moon to be the foremost. Those who belong to the other religions give preference, give importance to the mother only because they know; the Father is not going to accept anything that we say. An agreement can be received from the mother easily.

जिज्ञासु :- अभी जगदंबा की हालत ऐसा है ना।

बाबा :- हाँ जी। माँ इस चालबाजी को नहीं समझ पाती कि बच्चे क्यों मक्खनबाजी करते हैं, माँ की इतनी ज्यादा। प्रॉपर्टी लेने के लिए।

जिज्ञासु :- अभी तक उसको ये पता नहीं पड़ रहा है।

बाबा :- हाँ जी।

**Student:** Now *Jagdamba* is in such a condition, isn't she?

**Baba:** Yes. The mother is unable to understand the trickery that why do the children butter the mother so much. They do it to obtain the property.

**Student:** She is not yet able to know this.

**Baba:** Yes.

जिज्ञासु:- बाबा, जगदंबा तो सबकी मनोकामनाएँ पूर्ण करने वाली है ना!

बाबा :- सबकी मनोकामनाएँ – ये अधूरी बात कह दी। जगदंबा है – सर्व मनोकामनाएँ पूरी करनेवाली। उसमें अच्छी मनोकामनाएँ भी आ जाती हैं और बुरी भी आ जाती हैं और जो लक्ष्मी है, वो सिर्फ एक ही मनोकामना को पूरा करती है और वो मनोकामना (की पूर्ति) लक्ष्मी की ताकत से नहीं होती है। परमपिता परमात्मा शिव से जो ज्ञान मिला है, उस ज्ञान धन की मनोकामना की पूर्ति करती है। अपनी कोई भी इच्छा उसमें तिरोहित नहीं रहती। और जगदंबा?

जिज्ञासु :- अपनी खुद ही देती है।

**Student:** Baba, *Jagdamba* is the one to fulfill everybody's desires, isn't she?

**Baba:** 'Everybody's desires', you have spoken an incomplete sentence. *Jagdamba* is the one to fulfill all the desires. It includes the good desires as well as the bad ones and *Lakshmi* fulfills only one desire and that desire is not (fulfilled) with the power of *Lakshmi*. She fulfills the desire of the wealth of knowledge that is received from the Supreme Father Supreme Soul Shiv. None of her self desire is included in that. And what about *Jagdamba*?

**Student:** She gives herself.

बाबा :- हाँ, खुद के द्वारा देती है, तो मनुष्य मनुष्य को क्या देगा? श्रेष्ठ देगा या भ्रष्ट देगा? मनुष्य तो मनुष्य को ही भ्रष्ट ही देगा। भ्रष्टता का वर्सा देगा। तो जगदंबा श्रेष्ठ है या लक्ष्मी श्रेष्ठ है? लक्ष्मी श्रेष्ठ है, जो भगवान की दी हुई देन देती है दूसरों को। बच्चे तो भाँति-2 के बच्चे हैं। कोई गंदी मनोकामना ले करके आवेंगे माँ की गोदी में, कोई अच्छी मनोकामना ले करके आवेंगे। जगदंबा सबकी मनोकामनाएँ पूरी कर देती है। तो अच्छी दुनियाँ का बीज पड़ेगा या खराब दुनियाँ का बीज पड़ेगा?

**Baba:** Yes, she gives it through herself, so, what will one human being give to the other human being? Will he give a righteous thing or an unrighteous thing? A human being will give another human being only unrighteous thing. He will give them the inheritance of unrighteousness. So, is *Jagdamba* righteous or *Lakshmi* righteous? *Lakshmi* is righteous, who gives to others the gift received from God. There are a variety of children. Some will come to the mother's lap with a dirty desire; some will come with a good desire. *Jagdamba* fulfills everybody's desires. So, will the seed for a good world be sown or will the seed for a bad world be sown?

जिज्ञासु :- ब्रह्मा को जो बच्चे दुःख दिया, वो सबकुछ सहन किया। उसका हिसाब-किताब भी इस समय पर ही चुक्त्तू करना है ना! तो उन बच्चों को किस रूप में हिसाब-किताब पूरा करना है?

बाबा :- धर्मराज का पार्ट बजानेवाली वास्तव में आत्मा कौन है? महाकाली का पार्ट कौन बजाएगा?

जिज्ञासु :- ब्रह्मा बाबा।

बाबा :- फिर? तो जिन बच्चों ने इस जन्म में या पूर्व जन्म में जो भी ब्रह्मा को दुःख दिया है, वो हिसाब-किताब कहाँ पूरा करेगा? सौ गुना हिसाब-किताब बनता है। एक-2 की सौ-2 गुनी गिनाएगा। ऐसे नहीं ये पृथ्वी की धुरी ऐसी ही टेढ़ी बनी रहेगी। पृथ्वी की धुरी चेंज होगी। सारी धुरियाँ ही उलट-पुलट होनेवाली हैं।

जिज्ञासु:- उसमें सारी दुनियाँ आ जाएगी ना!

बाबा :- हाँ, जी।

**Student:** Brahma tolerated whatever sorrows children gave him. Also its karmic accounts are to be settled here at this time only, aren't they? So, in what way do those children have to settle the karmic accounts?

**Baba:** Which soul actually plays the role of *Dharmaraj*? Who will play the role of *Mahakali*?

**Student:** Brahma Baba.

**Baba:** Then? So, where will Brahma settle the karmic accounts with the children who have given him whatever sorrows in this birth or in the past birth? A hundred times karmic account is formed. He will make them count hundred times for every sin of everyone. It is not as if the axis (*dhuri*) of this Earth will continue to remain inclined like this. The axis of the Earth will change. All the axes are going to turn upside down.

**Student:** It will include the entire world, won't it?

**Baba:** Yes.

जिज्ञासु :- सारी दुनियाँ की धुरी चेंज होना।

बाबा :- हाँ-2, सारी दुनियाँ बाद में। पहले चैतन्य आत्मा को पकड़ो। परिवर्तन चैतन्य आत्मा से शुरू होगा या सारी दुनियाँ से होगा?

जिज्ञासु :- चैतन्य आत्मा से।

बाबा :- हाँ, जी।

जिज्ञासु :- कलियुग का शूटिंग पीरियड 2004-05 में पूरा हुआ और अभी जो समय चल रहा है, वो संगम का समय समझना है बाबा?

बाबा :- संगम के अंदर संगम। जैसे यज्ञ के आदि में 10 वर्ष का संगम था। ऐसे ही ये अंत में भी संगम में भी संगम है।

जिज्ञासु :- सतयुग आदि का संगम।

बाबा :- हाँ जी।

**Student:** The axis of the entire world will change.

**Baba:** Yes, yes, consider the entire world later. First think of the living soul. Will the transformation begin with the living soul or with the entire world?

**Student:** With the living soul.

**Baba:** Yes.

**Student:** The shooting period of the Iron Age was over in 2004-05 and Baba, should the time that is going on now be considered as the time of the Confluence Age?

**Baba:** Confluence within the confluence. For example, in the beginning of the *yagya* there was a confluence of 10 years. Similarly, this is a confluence within the confluence in the end as well.

**Student:** The confluence of the beginning of the Golden Age.

**Baba:** Yes. (to be continued)

## Part 2

जिज्ञासु :- रामवाली आत्मा ने आदि में बीज डाला और शरीर छोड़ दिया और जन्म लिया और 1969 में ज्ञान में आए। बीच का जो पीरियड है

बाबा :- लौकिक जीवन का?

जिज्ञासु :- लौकिक जीवन हो गया। वो जीवन कैसा होता है?

बाबा :- 63 जन्मों का जो रहा—सहा हिसाब—किताब है, लौकिक दुनियाँ का या अलौकिक दुनियाँ के कुछ भाँतियों का, वो हिसाब पूरा करती है।

**Student:** The soul of Ram sowed the seed in the beginning and left the body and then took (re)birth and entered the path of knowledge in 1969. The period in between.....

**Baba:** Of the *lokik* life?

**Student:** It was *lokik* life. How was that life?

**Baba:** It settles the remaining karmic accounts of 63 births with the people of the *lokik* world or the *alokik* world.

जिज्ञासु :- माना पूर्वजन्म के संस्कार, ज्ञान के संस्कार वो चलते हैं बाबा?

बाबा :- तो भक्तिमार्ग के जो संस्कार रह गए होंगे, वो पूरे करेगी।

जिज्ञासु :- वो चलती रहेगी।

बाबा :- चलेगी नहीं तो वो ब्राह्मण जन्म परिपूर्ण कैसे बनेगा? सन् 76 से ब्राह्मण परिपूर्ण जन्म कहेंगे या अपूर्ण जन्म कहेंगे? सम्पूर्ण ब्राह्मण कहेंगे या अपूर्ण ब्राह्मण कहेंगे? 69 से तो नहीं कहेंगे। वो तो बेसिक नॉलेज की शुरुआत है; लेकिन बेसिक नॉलेज की परिपक्वता कहाँ पर है, जिसे बोला गया – आत्मा रूपी सुई की सारी कट उतरने पर बेसिकली अंत में तुम डाइरेक्ट बाप से सीखेंगे। वो कौन—सा टाइम है, जहाँ से डाइरेक्ट सीखना शुरू करती है।

**Student:** Baba, does it mean that the *sanskars* of the past birth, the *sanskars* of knowledge continue?

**Baba:** So, it will complete the *sanskars* of the path of worship which would have remained.

**Student:** Will that continue?

**Baba:** If it does not continue then how will that Brahmin birth become complete? From 1976, will it be called a complete Brahmin birth or an incomplete Brahmin birth? Will he be called a complete Brahmin or an incomplete Brahmin? He will not be said to be complete from 1969. That is the beginning of the basic knowledge, but when is the maturity of the basic knowledge, for which it has been said, “when the entire rust of the needle-like soul is removed basically, then you will learn directly from the Father in the end.” Which is that time when it starts learning directly?

जिज्ञासु :- बाप से डाइरेक्ट सीखना माना 76 की बात है।

बाबा :- उससे पहले डाइरेक्ट नहीं सीखती है? उससे पहले जो एडवांस के विचार चलते हैं, जो एडवांस के संकल्प चलते हैं एडवांस ज्ञान के, वो उसकी अपनी क्रिएशन है या बाप की क्रिएशन है?

जिज्ञासु :- बाप की।

बाबा :- फिर? माने बाप शिव ने प्रवेश 69 से ही किया या 76 से किया?

जिज्ञासु :- प्रवेश 69 से किया, प्रत्यक्ष

बाबा :- हाँ, प्रत्यक्ष 76 से हुआ। जैसे – मानवीय शरीर की रचना होती है, तो पिंड तो पहले से ही तैयार होता है। क्या? पहले से ही तैयार होता है। उसमें बाद में आत्मा प्रवेश करती है; लेकिन प्रत्यक्ष नहीं होती। बाद में प्रत्यक्ष होती है। ऐसे ही

**Student:** Learning directly from the Father means that it is about 1976.

**Baba:** Does it not learn directly (from the Father) before that? Are the thoughts that arise about the advanced (knowledge), the thoughts of advanced (knowledge) that are created his own creation or the creation of the Father?

**Student:** (Creation) of the Father.

**Baba:** Then? Does it mean that Father Shiv started entering from 1969 itself or from 1976?

**Student:** He started entering from 1969, but revelation...

**Baba:** Yes, the revelation began from 1976. For example, when the human body is created, the foetus (*pinde*) is ready beforehand. What? It is ready beforehand. Later on the soul enters in it, but it does not reveal. It is revealed later on. Similarly.....

जिज्ञासु :- मैं तो अंतर्दामी नहीं हूँ – ऐसे बाप कहते हैं ना! लेकिन जब आत्माएँ सामने आते हैं, तो बाप को पता पड़ता है ना कि इसमें क्या संकल्प है। जब आत्मा बाप के सामने आती है

बाबा :- कौन-से बाप के सामने? यहाँ तो दो बेहद के बाप हैं।

जिज्ञासु :- शिवबाबा के सामने आती है।

बाबा :- शिवबाप के सामने आती है, तो शिवबाप की आत्मा को पता पड़ता है।

जिज्ञासु :- शिवबाबा के सामने आती है।

**Student:** The Father says, “I am not a thought reader (*antaryami*)”, doesn’t He? But when souls (in bodily form) come in front (of the Father) then, the Father comes to know about the thoughts in his mind, doesn’t He? When the souls (in the corporeal form) come in front of the Father....

**Baba:** In front of which Father? Here, there are two unlimited Fathers.

**Student:** When it comes in front of Shivbaba.

**Baba:** When it comes in front of the Father Shiv, then the soul of the Father Shiv comes to know.

**Student:** (When) it comes in front of Shivbaba.

बाबा :- शिवबाबा के सामने आती है, तो उसमें दो आत्माएँ हैं। एक है अंतर्दामी और एक है बहिर्दामी। बहिर्दामी के सामने जब बोलेगी, एक्ट करेगी, वाइब्रेशन छोड़ेगी, तो बहिर्दामी को पता चलेगा। लिख करके पोतोमेल नहीं देगी, तो बहिर्दामी को पता चलनेवाला नहीं है। तुरंत पता नहीं चलेगा। हाँ, थोड़े समय के बाद जान जाएगी। अच्छा, ये इसने ये लिख के दिया। ये तो बिल्कुल नहीं हो सकता ज्ञान के अनुसार। ज्ञान से टैली करने के बाद समझेगी और

निराकार, अंतर्दामी, वो तो पहले से ही जानता है। पोतामेल लिख करके लेने की क्या दरकार? अंतर्दामी को जरूरत है या बहिर्यामी को जरूरत है? बहिर्यामी को जरूरत है।

जिज्ञासु :- अंतर्दामी को जान करके भी, उसको कोई चिंता नहीं।

बाबा :- उसको क्या दरकार एक-2 के अंदर को जानने की।

जिज्ञासु :- जब सामने आती है।

बाबा :- सामने साकार के आने की बात है या सामने निराकार के आने की बात है? निराकार को तो सब वैसे ही मालूम है।

**Baba:** When it comes in front of Shivbaba, there are two souls (involved in this). One is thought reader (*antaryaami*) and the other is extrovert (*bahiryaami*). When it (soul) speaks, when it acts, when it spreads vibrations in front of the extrovert (father), then he will come to know. If it does not give *potamail* in writing, then the extrovert (father) will not come to know. He will not come to know immediately. Yes, he will come to know after some time. OK, he has given this in writing. This cannot be possible at all according to the knowledge. He will understand after tallying it with knowledge and as regards the incorporeal, the thought reader (Father), He already knows (everything). Where is the need to take *potamail* in writing? Is it necessary for the thought reader or for the extrovert? The extrovert (father) needs it.

**Student:** Even if the thought reader knows, He does not have any worry.

**Baba:** Where is the need for Him to look into each and everyone's mind?

**Student:** When it (soul in the form of a corporeal being) comes in front of Him.

**Baba:** Is it a matter of coming in front of the corporeal or in front of the incorporeal? The incorporeal one knows everything anyway.

जिज्ञासु :- पक्का देवता है, उसको बाप जो कहता है, उसको सही पसंद लगती है। लेकिन बाप ऐसा कहते हैं – मुझे ज्ञानी तो आत्मा प्रिय है। ज्ञानी आत्मा जो है वो ज्ञान, भावना और बुद्धि को स्वीकार करती है वो तो ज्ञानी तू आत्मा है ना! सिर्फ भावना से चलनेवाले ज्ञानी नहीं हैं ना! दोनों का बैलेन्स चाहिए ना!

**Student:** (Suppose) someone is a firm deity; he likes and feels correct whatever the Father tells him. But the Father says, "I like knowledgeable souls." The knowledgeable soul accepts the knowledge, feelings and intellect; such a soul is knowledgeable, isn't it? Those who follow just by emotions are not knowledgeable, are they? A balance of both is required, isn't it?

बाबा :- भावना और कामना दो प्रकार की हो सकती है: शुभभावना और शुभकामना। एक अशुभभावना और एक अशुभकामना। तो बाप क्या चाहता है? शुभभावना चाहता है, शुभकामना चाहता है। ये शुभभावना और शुभकामना उसी के अंदर आएगी, जो बाप से सच्चा होगा। सच्चा पोतामेल देनेवाला होगा। जो मुरली में बोला-अपना पूरा-2 सच्चा पोतामेल देनेवाला कोई कोटों-करोड़ों पुरुषार्थियों में से एक है। नहीं तो कुछ न कुछ अपना पोतामेल छुपाए लेंगे। बाप ने कहा है – दो लाइन में अपना सारा जिंदगी का पोतामेल लिख सकते हैं। इस व्यक्ति के साथ, इस-2 स्थान पर, इस उम्र में ऐसा-2 काम हो गया। अब क्या करेंगे? जो छुपाने वाले होंगे लम्बा-4 उसको लिखेंगे ताकि बात बदल जाए। उस विस्तार में सार की बात छिप जाती है। पोतामेल झूठा साबित हो जाता है। बाप समझ जाते हैं, ये

पोतामेल सच्चा नहीं है। या तो नाम को छुपा लेंगे, या तो उम्र को छुपा लेंगे, या तो स्थान को छुपा लेंगे, व्यक्तियों को छुपा लेंगे, संबंधियों को छुपा लेंगे।

**Baba:** Feelings (*bhaavnaa*) and desires (*kaamnaa*) can be of two kinds. Good feelings and good desires. One is bad feelings and bad desires. So, what does the Father want? He wants (us to have) good feelings, good desires. Only the one, who is true to the Father, will have good feelings and good desires. He will be the one to give true *potamail*, for which it has been said in the Murli, “There is only one among crores (billions) of makers of special efforts for he soul who gives his complete true *potamail*.” Otherwise they will hide their *potamail* to some extent or the other. The Father has said, “One can write the *potamail* of his entire life in two lines.” I did like this with such and such person, at such and such place, at such age. Well what will they do? Those who are to be the ones to hide it, they will write it very elaborately so that the subject may change. The topic of essence hides in that expansion. The *potamail* proves to be false. The Father understands that this *potamail* is not true. Either they will hide the name or the age or the place or the persons or the relatives.

जिज्ञासु :- ज्ञानी तू आत्मा की सही डेफिनेशन ये है कि जो ज्ञान और भावना दोनों को.....  
बाबा :- भावना शुद्ध और कामना शुद्ध उसी की हो सकती है, जिसकी बुद्धि में बाप की पूरी पहचान होगी। पहचान में कोई कमी होगी, अनिश्चय बुद्धि होगा, कोई-2 बातों में निश्चय पक्का नहीं होगा, तो पूरा पोतामेल कतई नहीं देगा।

**Student:** The correct definition of a knowledgeable soul is that they would have both knowledge and feelings.....

**Baba:** Only that person can have a pure feeling and pure desire, in whose intellect there will be complete recognition of the Father. If there is any shortcoming in realization (of the Father), if he is of a doubtful intellect, if the faith is not strong in some subjects, then he will never give complete *potamail*. (to be continued)

### Part 3

बाबा :- एक प्रश्न आया है – कारण शरीर जितना पॉवरफुल होगा उतना सूक्ष्म शरीर और स्थूल शरीर जन्म-जन्मांतर के लिए पॉवरफुल होता जाएगा। कारण शरीर माना क्या है? कारण शरीर माना साकार नहीं। कारण शरीर, सूक्ष्म शरीर और स्थूल शरीर – तीन प्रकार के शरीर हैं – ऐसे भक्तिमार्ग में बोलते हैं; लेकिन बाबा का तो कहना है कि – आत्मा बिंदु वही सूक्ष्म शरीर का कारण है। सूक्ष्म शरीर उससे पहले क्या था परमधाम में? बिंदु, कारण शरीर और जैसा सूक्ष्म शरीर का निर्माण होता है, वही स्थूल शरीर भी बनता है। तो तीन शरीर हैं: बिंदु रूपी स्टेज। बिंदु है कारण माने अपन को आत्मा स्टार समझना। जितना-2 हम आत्मिक स्थिति में स्टार रूप में स्थिर होंगे उतना हमारा कारण शरीर मजबूत हो गया। अपने को देखें कि – हम कितना निराकारी स्टार रूप में टिकते हैं। कुछ भी याद न आए सिवाए स्टार के। अगर लम्बे-से-लम्बे समय तक हम टिक पाते हैं, तो उतना ही हमारा सूक्ष्म शरीर और स्थूल शरीर पॉवरफुल बनेगा। नहीं तो नहीं बनेगा।



**Baba:** A (written) question has been asked, “the more powerful a causal body (*kaaran shareer*) is, the more his subtle (*sookshma*) and physical (*sthool*) body will go on becoming powerful for many births. What does causal body mean?” Causal body does not mean corporeal body. It is said in the path of worship that there are three kinds of bodies’ causal body, subtle body and physical body. But Baba says, “the point-like soul itself is the cause of the subtle body.” What was (the form) of subtle body earlier in the Supreme Abode? (It was) the point, the causal body. And the physical body is formed in accordance with the formation of. The subtle body. So, there are three bodies, point-like stage. Point is the cause, i.e. to consider oneself to be a star-like soul. The more we become constant in the soul conscious stage, in the form of star; the more our causal body will become strong. We should check ourselves to what extent we become constant in the incorporeal star form stage. You should not remember anything except the star. If we are able to become constant for a long time, then our subtle body and the physical body will become powerful to the same extent. Otherwise it will not become.

अगला प्रश्न है – इससे स्थूल और सूक्ष्म शरीर जन्म-जन्मांतर के लिए पॉवरफुल कैसे बनेगा? माने जो कारण शरीर है, उससे जन्म-जन्मांतर के लिए स्थूल शरीर और सूक्ष्म शरीर पॉवरफुल कैसे बनेगा? अरे, ये तो सीधी-सी बात है। जितना बीज पॉवरफुल होगा उतना उसका जो, जैसे – कोई पेड़ की पौध लगाई जाती है ना! तो बीज को पहले छोटी-2 थैलियों में बोया जाता है। उसको कहते हैं – पौध, हिंदी में। तेलगू में क्या कहते हैं? जो कुछ भी कहते हों। प्लान्ट्स। जो प्लान्टिंग की जाती है, जितना बीज पॉवरफुल होगा उतना प्लान्ट पॉवरफुल होगा। प्लान्ट जितना पॉवरफुल होगा उतना फिर पेड़ भी पॉवरफुल हो जाएगा। वो प्लान्ट्स और वो पेड़ और वो बीज, वो जड़ हैं। उनमें जड़त्व ज्यादा है। धरणी में बोये जाते हैं, तो चैतन्यता आ जाती है। ऐसे ही हम आत्माएँ भी परमधाम में जड़ हैं, जब इस सृष्टि पर आती हैं, तो चैतन्य हो जाती हैं। चैतन्य आत्मा में वो पॉवर है। प्लान्ट उसका जितना मजबूत होगा, अभी प्लान्टेशन हो रही है।

**The next question is** – How will the physical and subtle body become powerful for many births through this? It means that how will the physical body and the subtle body become powerful for many births through the causal body? Arey, it is a simple topic. The more powerful a seed is, the more; for example, when the sapling of a tree is planted, then the seeds are initially sown in small packets (of mud). That is called ‘*paudh*’ in Hindi. What do they call it in Telugu (language spoken in Andhra Pradesh state of South India)? Whatever they might call it. Plants. When the planting is done, the more powerful a seed is, the more powerful the plant will be. The more powerful the plant is, the more powerful the tree will be. Those plants, those trees, those seeds, they are non-living. The component of inertness is more in them. When the seeds are sown in the land, they become living. Similarly, we souls are also non-living in the Supreme Abode; when we come in this world, we become living. The living soul has that power. The more powerful its plant is; now plantation is taking place.

हर आत्मा ज्ञान के आधार पर योग के आधार पर अपने बीज को पॉवरफुल बनाए सकती है। कैसे पता चले कि – ये पॉवरफुल आत्मा हो गई, बीज कारण में पॉवर भर गई। तो रोज के कान्संट्रेशन को अमृतवेले देखो कि – मैं आत्मा कितने लम्बे समय तक एक ही बीजरूपी स्टेज में टिक सकती हूँ? अगर लम्बे समय तक टिकेगी, तो जरूर पॉवरफुल बीज है। नहीं



टिक पायेगी, तो पॉवरफुल नहीं है। ये पॉवरफुल और ये वीकनेस – ये क्या होती है? जैसे कि नौजवान आदमी पॉवरफुल होता है। बच्चे में उतनी पॉवर नहीं होती। जो बुड्ढा हो जाता है, उसमें भी पॉवर नहीं होती। तो क्या अंतर पड़ता है? वो भी खाता-पीता है, वो भी खाता-पीता है। अंतर क्या पड़ता है?

Every soul can make its seed powerful on the basis of knowledge and on the basis of *yog*. How can one know whether a soul has become powerful, the seed-like cause has been filled with power? So, check the concentration at *Amritvela* (early morning hours) everyday, how long can I, a soul become constant in a uniform seed-like stage? If a seed can become constant in such a stage for a longer time, then it is definitely a powerful seed. If it is not able to become constant in such a stage, then it is not powerful. What is this powerful and this weakness? For example a young man is powerful. A child does not have power to that extent. Even a person who grows old does not have power. So, what is the difference? He (a young man) too eats and drinks; he (an old man / a child) too eats and drinks. What is the difference (between both of them)?

जो नौजवान है, पॉवरफुल होने के कारण ज्यादा सुख भोग सकता है। विकारी सुख भी जास्ती भोगता है और निर्विकारी सुख भी जास्ती भोग सकता है। जैसा कि मुरली में बोला है – कुमार जो चाहे सो कर सकते हैं। क्यों? अधरकुमार क्यों नहीं कर सकते? क्या कमी आ जाती है? अधरकुमार विकारों में जाने के कारण कमजोर आत्मा हो जाती है और जो कुमार हैं, वो नौजवान शरीर होता है, उसमें ब्रह्मचर्य की पॉवर मौजूद रहती है, तो पॉवरफुल होने के कारण ज्यादा लम्बे समय का सुख भोग सकते हैं। ऐसे ही वो तो स्थूल बात हो गई। ये है आत्मा की बात। अभी आत्मा जितनी बीजरूपी स्टेजवाली होगी उतना लम्बे समय तक सतयुग-त्रेता में भी ज्यादा सुख भोगेगी ऊँची स्टेज में और द्वापर-कलियुग में भी ज्यादा सुख भोगने वाली जन्म जन्मांतर बनेगी। ये कारण शरीर कारण बन जाता है सूक्ष्म शरीर का अर्थात् प्लान्टेशन का और स्थूल शरीर अर्थात् पेड़ का। ओमशांति।

Being powerful the young man can enjoy more pleasure. He enjoys vicious pleasure more as well as he can enjoy viceless pleasure to a greater extent. For example it has been said in the Murlis, Kumars can do whatever they want.” Why? Why can’t *adharkumars* (married men) do? What is the lacking that arises in them? The soul of *adharkumars* becomes weak because of having indulged in vices/lust and the *kumars* have a young body, which contains the power of celibacy (*brahmacharya*), so because of being powerful, they can enjoy happiness for a long time. So, that is in a physical sense. This is a subject of the soul. Now, the more a soul will possess a seed-form stage, the longer it will enjoy happiness in the Golden Age and Silver Age in a high stage and even in the Copper Age and the Iron Age, it will enjoy more happiness for many births. This causal body becomes the cause of the subtle body, i.e. of plantation and of the physical body, i.e. of the tree. Om shanti. (Concluded)

.....  
Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.